

निमदयः शानिनीधनधायिनी पद्मनी पद्मधनी च पद्मासासनमासनी ॥ शुद्धनृपीमहाः
कुरु हनवेहैककयी ॥ चिकामलिधनी ददी शुद्धयस्तु कथाविमो ॥ निधनकुरुमाचरो
धन्याभात्र धनेयिया ॥ देवाहुकमहा आदी दिवा रुत्रह रुषिणी ॥ साकनी सर्ववृक्षा नं वने २
साकनी वनी ॥ शुद्धमाका वनी ददी सावाहा ववि वकिणी ॥ वेद्ययकि विनकात्र दीपिणी ॥
साकनी वनी ॥ निनी सर्वमालानां सकपालावका रुमी ॥ वाक्कली वद सावा शुद्ध या

कसुखावनी ॥ २८ ॥ शुद्धि
ककं वरुसाविमं समाकुरु ॥ वा
उं नमः शी वरु विदात्र (धोः) ॥
रुगवान वरु वृविहत्र मिस्मा ॥
रुकाधरुयं वरु सापदासावः

शीवसुधावा नामाक्षरुत्रम
यधमोहुरु ॥ २९ ॥
नुवर्मया शुद्धमकस्मिन्मथ
सर्वगनी वं वरु मधिष्ठायाव
कस्मा ॥ शुद्धयं शुद्धयं हरुस्मि

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ

हृदि स्थितं वसुविष्णुविवा दपुत्रिणं समन... नगच्छामदि नर कानाम्
यस्य फलं वा जाने वा नयि क व्यां महा मोक्षो व्या रुवे मि। वा ऊ क ल य सा द रु वि ष्य मि। अग्नि ध वा
उ रु वि ष्य मि न वा स्य क स्य वि न अ व ना न यु क्ती। एष अ व ना न ग व कि अ व ना नं पु मि न य्य मि। नः
वा स्य वा धि वि रु क्त जा या रु वि ष्य मि जा नो २ जा मि स ना रु वि ष्य मि॥ ॥ॐ द स वा च रु
रु ग वा ना त ना म व रु क्त वः॥ रु च वा धि स त्वा म हा स त्वा सा च स वा व नी प र्ष त्स द व मा

नृषा स त्र सा का रु ग व ना सा पि
य गे त प नि रु द या ना म धा नः
॥ॐ न मः श्री व द्वा य॥ ॐ न मा रु
द्राय व द्वा य न मः॥ ॐ रुं रुं
म स का व रा स ह न त ग मि गः

न म स्य न च मि मि॥ ॥ आ
धी स मा प॥ ॥ॐ॥ अ ध र्मा शा
ग व षि स र्वे रु सा य पु मि वि मि
रुं॥ गा ध य र वि॥ गा ध य र अ स
ग व स्य रु व वि रु क्त उ रु षा वि

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ सर्वत्र भगवत्पदं सर्वत्र भगवत्पदं सर्वत्र भगवत्पदं ॥ १० ॥

[illegible]

[illegible]

मृत्तुं त्वं वद नामं ह्यसंस्कारा विह्वलानि गूढाणां त्वं भविष्यसर्वधर्मा
 यत्नाः अनिष्टकाज्ज्वलाः विमलाः अच्युताः असंपूर्णाः शरीरमाहृतिगानि पुरुषं न ता यानि नृ
 पं न वदनां संस्कारा संस्कारा न विह्वलानि न वदक न एतं न द्यामं न जिह्वान कायं न मनान्नृपा नः
 न वदनां संस्कारा संस्कारा न विह्वलानि न वदक न एतं न द्यामं न जिह्वान कायं न मनान्नृपा नः
 न वदनां संस्कारा संस्कारा न विह्वलानि न वदक न एतं न द्यामं न जिह्वान कायं न मनान्नृपा नः
 न वदनां संस्कारा संस्कारा न विह्वलानि न वदक न एतं न द्यामं न जिह्वान कायं न मनान्नृपा नः

ॐ
क

॥ ह्रीं नमः श्री मां श्री ॥
स ग वा न श व ह्यां वि रु न रि स
म ह गारि रु सं ध न सा ह म ह रु
म हा ण व के वा धि स त्वे म हा स त्वे
य क सा ॥ अ लि रि रु वा मा नै वी

न व सा या रु क म क सि न स म यः
॥ ऊ रु व न अ ना थ पि उ सा चाम
या द ग रि रि रु ग केः स व रु ले य ॥ १४
॥ क रु व ल रु ग वा न रि रु ना म रु
ना म द व ता सा स य च रु म सा ह

ना दि त्वा सा भां भा ज व रु रु ह्य कि रु क ग नि य न ना रु क रु रि न रु विं ग रि न रु जा दि रि रु य
सा ना स हा व रु स म ग लं का न व रु हा धि ष्ठा ना धि लि रु सिं हा स न वि रु न रि स ॥ अ न के वा न रि स
व रु रु रु रु रु रु ॥ रु रु थ ॥ व रु पा दि ना च वा धि स त्वे न म हा स त्वे ना व रु च लु ना च व रु
धि स त्वे न म हा स त्वे ना व रु व रु ना च वा धि स त्वे न म हा स त्वे ना व रु स न ना च वा धि स त्वे न म
हा स त्वे ना व रु वि ना य रु ना च वा धि स त्वे न म हा स त्वे ना व रु वा प रु रु ना च वा धि स त्वे न न

हासत्वन॥ वज्रविक्रमं न च वाधिसत्वनमहासत्वन॥ वज्राधिपना च वाधिसत्वनमहासः
 सत्वन॥ वज्रात्मकानं न च वाधिसत्वनमहासत्वन॥ वज्रविक्रमं न च वाधिसत्वनमहासत्वन
 ॥ अथ हि वज्रना च वाधिसत्वनमहासत्वन॥ अवसाकिं न च वाधिसत्वनमहासत्वन॥
 सत्वनं न च वाधिसत्वनमहासत्वन॥ समका वसाकिं न च वाधिसत्वनमहासत्वन
 ॥ अथ हि वज्रना च वाधिसत्वनमहासत्वन॥ यमकं न च वाधिसत्वनमहासत्वन॥ अथ हि

एडवायकूचीने॥कषाचिडाडाहावायकूचीने॥कषाचिडुवमपदचकि॥कषाचिडोपीय
कानोसत्तानासत्तायकूचीने॥उवत्तसर्वसत्तान्पडवनवाहयकि॥मईगयडुमरुगवात्त
नामयोर्यवाचि॥सत्तान्पडवत्तारुविषयकि॥ ॥रुगवानाह॥सायसायवत्तगाल
यह॥सत्तानांमयेहिगायसखायकूपाविलमत्तायमहायुक्तानिपुक्तकंजो॥यगक
ह॥सत्तानांमयेहिगायसखायकूपाविलमत्तायमहायुक्तानिपुक्तकंजो॥यगक

मावंप्रजसीवन्धकूरुयामः॥ अथमाद्यमनिरुगवाकथागमाहेतुसंबन्धयहान्मले
 पूजाकायकस्म॥ ॥ॐ मद्याकायस्वाहा॥ ॐ गोमां गवस्वाहा॥ ॐ नकांकुमानायस्वा
 हा॥ ॐ वजायस्वाहा॥ ॐ आगस्यदायस्वाहा॥ ॐ अमनारुमायस्वाहा॥ ॐ रुद्रवह्नीयस्वा
 हा॥ ॐ अमृतरुषियायस्वाहा॥ ॐ अमि कुरुवनमःस्वाहा॥ ॥ॐ मानिवरुपाख्यानव
 यहावाचमनुहदयापठिमसिद्धानिरुवेन्नियथान्॥ ॥कर्मवह्नीरुदनदिग्म

गन्धमधुनकपत्रमध्वजादगमहुनप्रमार्गचरुवसुचरुवाजयहुक्तावनगामरिमं
कलागजममन्त्रिकंकरुव्यःकलमध्वगिरिककमत्राप्रत्रिकंकुमनध्वमधुनकावेकयद्वेवलाह
हृदयमध्वमधुनकजगत्प्राणिनकमलध्वनंनक्रवधुमधुनस्यकोटिसमयुक्तमि
नवधुसमकजगत्प्राणिनविग्रहं॥ ॥ ॐ मधोकायनमःस्तुतु ॥ १ ॥ पूर्वस्यानि
जिह्वककमलाप्रत्रियोयंगुगन्धमधुनकमामवाक्कदाकूकिल्लयःगिरिकवधुजिह्वमकूट

धनं दुःखं न अकुरु कस्युत्तमं न कुरु दयया वसका ॥ ॥ ॐ नमः ॥ चण्डासुतविजया
 धनं दुःखं नमः स्वाहा ॥ २ ॥ दक्षिणस्यादिगिगिरिपञ्चायत्रिचयनगन्धमसुतकरि
 धनं दुःखं नमः स्वाहा ॥ ३ ॥ पश्चिमस्यादिगिरिपञ्चायत्रिचयनगन्धमसुतकरि
 धनं दुःखं नमः स्वाहा ॥ ४ ॥ पूर्वस्यादिगिरिपञ्चायत्रिचयनगन्धमसुतकरि

॥ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥

॥ दक्षिणसत्यादिगिगिरुपमाययिचदतगधमउतकदि

॥ अंगुलीका वाक्को दक्रदहने क्रमः अक्रमण क्रमयुतु वनः ॥ ॥ उत्तमः वक्रः ॥

॥ उं नमः वेकाः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ३ ॥ ॥ पश्यिन्तोयादिमित्रकृपयापानकृपापुत्रगन्ध

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नभःस्थानं गन्धपूजयित्वा पञ्चनक्तं पुष्पक्रियाद्या देयः स चेष्टामुखयष्टकादशामाहः ॥ नव

वदन्ते जाम्बतमूडा विज्ञानिरुवाकः॥

॥ उं नमः सर्वे नथाग नमः सर्वे साधन

पूजकस्यः सच धौलाकृतस्यः सच ग्रहस्यः स्वाहा ॥ विलुपय स्वा मन्त्रः ॥

॥ स क स फा स म नुं उ क क सः ॥ उ वं पू जि ना स र्व श हा वि वि ध नृ पि द द द मि वि य न्ना न म म
 (गो) ला ग्नां उ य क्य पिः ॥ सा ति द ऊ या (द) न व य हा नां स लु ह दे या ति पि ठि क सि द्धा ति ह रु वा
 य था नू क र्म व पु र्ण द न गे ध म उ ल कं रु त्वा द्वा द गं उ ति प्र मा न म उ ल स ध पू र्ण जि यि क
 या तिः शं सु म त्स य नृ षा दि ला रु त अ र्घ्य द त्वा अ क्श रु त ग न वा न य त्रि उ प्य क्ता प य्वा त्म न व
 उ या (द) य ह मा रु का ना स धा न ति म नु पा दा ति स क वा ना नू र्वा न यि क यानि ॥ न क र्म स र्वेः

वि वि द्वा न्नि द र जि च र स र्व वि द्वा न ना स न क नू स म स य नि वा न स्य स र्व स त्वा ना
 कृ प य र स र्व पा पा नि स य नि वा न स्य शो क र द क र द म य र द य य र उ र्द ग श्या त्म स र्वा
 वा न क र स र्व स त्वा ना क र स र्व न क र उ र्द पी ठा नि वा न थ र रु ग व नि षे य क र म ह य पः
 उ र्द य र स र्व क र्म वा ग य र स र्व पा पा नि स म स य नि वा न स्य व द र व पु नि र उ नू र व ध र
 म र र म म मू च र रु वा रु व रु वा रु व उ य उ य क पा र य पू न य र ग रु व नि म न यः

सर्वसुखनिदानस्य सर्वसुखानां च सर्वकथागताधिष्ठानाधिष्ठितं समर्थस्वाहा ॥ ३ ॥ स्वाहा ॥
 स्वाहा ॥ स्वाहा ॥ धीः स्वाहा ॥ उं आदित्याय स्वाहा ॥ उं भामाय स्वाहा ॥ उं अंगाय स्वाहा ॥
 उं यज्ञाय स्वाहा ॥ उं इन्द्राय स्वाहा ॥ उं युक्राय स्वाहा ॥ उं गनीश्वराय स्वाहा ॥ उं नार
 दाय स्वाहा ॥ उं वरुधनाय स्वाहा ॥ उं प्रमथनाय स्वाहा ॥ उं कुमाय स्वाहा ॥ उं
 सर्वनाथाय स्वाहा ॥ उं सर्वपदनाथाय स्वाहा ॥ उं द्वादशनाथाय स्वाहा ॥

॥ ३ ॥

दसवाचकगवाक्षनामकवारिकुवः नचबोधिसत्त्वामदासत्त्वसावहर्वाव
 नियत्यसदवमानव्यासुत्रगत्रुगधर्वश्रुता कोरुगवका कोरुगसत्यः
 नेन्दनिकि ॥ ॥ आयोग्यग्रहमात्रिकानामधुना समाकामिकि ॥ ॥
 यधम्माह्नियता वा हस्तुनियानधगन हवन्दनवांच याडानित्ता
 धनवनवादिमदासदमनं ॥ ॥ सर्वगुणमायस्त्रिमासकृत्तुय

कदादस्यानिता जगदाय धाक संयुक्तमिति ॥ लिखायि नृणां व
जायार्थं ग्राहनि गत्रवा हानया कर्मणा न विद्या रथा ॥ १२ ॥

२०

आज का काथि

1.497

ASHA ARCHIVES